निर्वाणषट्कम्

आदि शंकराचार्य द्वारा रचित स्तोत्र

श्लोक १

मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तानि नाहं
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे।
न च व्योम भूमिर्न तेजो न वायुः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्॥

मैं मन नहीं हूँ और न मैं बुद्धि, अहंकार या चित्त ही हूँ।
मैं न श्रोत्र हूँ और न जिह्वा, न नासिका या नेत्र हूँ।
मैं आकाश नहीं हूँ और वायु, अग्नि, जल एवं पृथ्वी भी नहीं हूँ।
मैं चिदानन्द-रूप हूँ। मैं शिव हूँ! मैं शिव हूँ!

श्लोक २

न च प्राणसंज्ञो न वै पञ्चवायुः
न वा सप्तधातुर्न वा पञ्चकोशः।
न वाक्पाणिपादं न चोपस्थपायू
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्॥

मैं प्राण-संज्ञा नहीं हूँ, मैं पंचवायु नहीं हूँ।
मैं सप्तधातु नहीं हूँ और न पंचकोश ही हूँ।
मैं हाथ-पाँव, वाणी, गुदा या जननेन्द्रिय भी नहीं हूँ।
मैं चिदानन्द-रूप हूँ। मैं शिव हूँ! मैं शिव हूँ!

श्लोक ३

न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ
मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्॥

मुझमें न द्वेष है, न राग; न लोभ, न मोह; न मद है, न मत्सर।
मुझमें धर्म नहीं है, अर्थ भी नहीं है।
न इच्छा है, न मोक्ष ही है।
मैं चिदानन्द-रूप हूँ। मैं शिव हूँ! मैं शिव हूँ!

श्लोक ४

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं
न मन्त्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्॥

मैं न पुण्य हूँ, न पाप हूँ; न सुख हूँ, न दुःख हूँ।
मैं मन्त्र नहीं हूँ, मैं तीर्थ नहीं हूँ। मैं वेद नहीं हूँ, यज्ञ भी नहीं हूँ।
मैं न भोजन हूँ, न भोजन का कर्म हूँ और न भोजन करने वाला हूँ।
मैं चिदानन्द-रूप हूँ। मैं शिव हूँ! मैं शिव हूँ!

श्लोक ५

न मृत्युर्न शङ्का न मे जातिभेदः
पिता नैव मे नैव माता च जन्म।
न बन्धुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्यः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्॥

मेरे लिए न मृत्यु है, न शंका है; न जाति-भेद है, न माता-पिता हैं।
मेरे लिए जन्म नहीं है।
मैं बन्धु नहीं हूँ, मित्र नहीं हूँ, गुरु नहीं हूँ, शिष्य नहीं हूँ।
मैं चिदानन्द-रूप हूँ। मैं शिव हूँ! मैं शिव हूँ!

श्लोक ६

अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो
विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।
न चासङ्गतं नैव मुक्तिर्न मेयः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्॥

मैं विचारहीन हूँ; आकारहीन हूँ।
सर्वशक्तिमान हूँ, सर्वत्र हूँ। सभी इन्द्रियों के परे, सबसे अलिप्त हूँ।
मेरे लिए मुक्ति भी कुछ नहीं है।
मैं चिदानन्द-रूप हूँ। मैं शिव हूँ! मैं शिव हूँ!

© एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

स्वाध्याय सुधा, २०१६ पुनर्मुद्रण [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, १९९४], पृ. २१३-२१४।